Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

केदारनाथ सिंह के काव्य का लोकपक्ष

Sheel*

Assistant, Professor (Hindi) Government College, Safidon, Karnal, Haryana

सार – केदारनाथ सिंह की कविताओं में सबसे अधिक आया हुआ बिंब वह है जो 'जोड़ता' है ! उन्हें वह हर चीज़ पसंद थी जो जोड़ती है ! वो चाहे सड़क हो या पुल, शब्द हो या सड़क, जो लोगों को मिलाती है, उनकी आंखों में एक छवि बनकर तैरती रहती और फिर पिघलकर कविता में ढल जाती है !

----------X----------

शोध-उद्देश्य:-

लोक किसी भी रचनाकार के लिए कच्चा माल होता है ! लोक कला की प्रमुख विशेषता है उसकी मौखिकता और इसी मौखिक गुण से रचनाकार बिम्ब लेता है अपनी रचना के लिए ! केदारनाथ सिंह लोक से जुड़े हुए रचनाकार हैं ! उनकी सभी रचनाओं में लोक रचा –बसा मिलता है ! उनके काव्य की इस प्रमुख विशेषता को प्रस्तुत करना ही शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य है !

लोक विरासत लिखित न होकर मौखिक होती है, इसे हम इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता भी मान सकते हैं। यह परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर चलती रहती है। एक साहित्कार जब अपने साहित्य को अधिक सजीव बनाने के लिए लोक. साहित्य, लोक-जीवन और लोक संस्कृति का तड़का अपने साहित्य में लगाता हैं, तो यह ज्यों का त्यों न रहकर इसमें लेखक की कल्पना का भी मिश्रण हो जाता है। डॉ. श्याम सुन्दर दुबे ने लिखा है-'लोक संस्कृति में निरन्तर प्रयोग की जीवन्त प्रक्रिया सन्निहित रही है। अतः वह अपने सांस्कृति आयामों में परम्परा-विछिन्नता के अंतरालों में खण्डित नहीं है। यह अलग बात है कि लोक-संस्कृति के आदिम प्रवाह के प्रतीक तीर्थ हमारी दृष्टि से ओझल होते गए हैं।(डॉ. श्याम सुन्दर दुबे, लोक परम्परा पहचान एवं प्रवाह पृ. 45.46)

केदारनाथ सिंह अपने साहित्य के लिए कच्चा माल लोक से ग्रहण करते हैं। लोक में प्रचलित गीत, लोक कथाऐं और ग्रामीण परिवेश में बसने वाले लोग का जीवन, संस्कृति पर उनकी गहरी नजर हमेशा बनी रही है। इसी परिवेश के ताने-बाने से वे अपनी रचनाओं का आकार तैयार करते हैं। केदरनाथ सिंह का सम्बन्ध निरन्तर अपने गाँव से बना रहा है। जिसके कारण उनकी शब्द-संपदा और भाषा ही नहीं समृद्ध हुई बल्कि उनको लोक देखने की अलग दृष्टि भी मिली। इनके काव्य में लोक का मा£मक गरीबी और शहरों की ओर देखते हुए ग्रामीणों का चित्र नहीं बल्कि इतने अभावों के बावजूद उनकी मासूम आँखें और किसी भी आपदा-दुःख को सहने का अदभ्य साहस के चित्र मिलते हैं। 'माँझी का पुल' नामक इनकी कविता इसका अच्छा उदाहरण हो सकती है, जिसमें नदी के पुल और गाँव के लोगों का सम्बन्ध का वर्णन मिलता है। जब लालमोहर नामक किसान हल चलाते हुए थक जाता है और उसे खैनी चबाने की तलब होती है तो वह बैलों के सींगों के बीच से माँझी का पुल देखता है-

लालमोहर हल चलाता है

और ऐन उसी वक्त

जब उसे खैनी की जरूरत महसूस होती है।

बैलों के सींगों के बींच से दिख जाता है,

माँझी का पुल....(केदारनाथ सिंह, मेरे साक्षात्कार, पृ. 105)

यही पुल अब पहुँच जाता है झपसी के पास जो एक गडरिया है और भेंड़े चरा रहा है-झपसी की भेड़े-

उसने बारहा देखा है-

जब चरते-चरते थक जाती है

तो मुँह उठाकर उस तरफ देखने लगती है

www.ignited.in

जिधर माँझी का पुल.....(केदारनाथ सिंह, जमीन पक रही है पृ. 95)

केदारनाथ सिंह मानते हैं ग्रामीण परिवेश में अभी सामूहिकता बोध जीवित है, जिसे हम विकास की अंधी दौड़ विस्मृत कर देना चाहते हैं। लोक का विशेष गुण सामूहिक ही है। इस संदर्भ में उनकी पानी से घिरे हुए लोग' दृव्टव्य है, जिसमें गाँव के लोगों का सामूहिक बोध और संघर्ष को कलात्मक ढ़ग से अभिव्यक्त किया गया है-

यह कितना अद्भूत है

कि बाढ़ चाहे जितनी भयानक हो,

उन्हें पानी में थोड़ी जगह जरूर मिल जाती है।

थोड़ी-सी धूप,

थोड़ा-सा आसमान

फिर गाड़ देते हैं खम्बे, तान देते हैं बोरे,

उलझा देते हैं मुंजू की रस्सियां और टाट

पानी में घिरे हुए लोग।(केदरानाथ सिंह, मेरे साक्षात्कार, पृ. 68)

उपर्युक्त चित्र है गाँव में आई बाढ़ का और लोगों के सामूहिक संघर्ष और उत्साह का और साथ में गंवई शब्दावली और भाषा जो कविता को सजीव और यथार्थ के धरातल पर ले आती है। अधिक समय कवि का गाँव से दूर रहना और सम्बन्ध टूटना कवि को विचलित ही नहीं करता बल्कि एक स्थान पर रूककर सोचने को भी मजबूर कर देता है-

'एक बूढ़े पक्षी की तरह लौट-लौटकर

मैं क्यों चला आता हूं बार-बार?

++++++++++++++++++++++++++++

यह हवा

मुझे घेरती क्यों है?

क्यों यहां चलते हुए लगता है अपनी सांस के अन्दर के

किसी गहरे भरे मैदान में चल रहा हूँ।(केदारनाथ सिंह, उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ, पृ. 11)

यहाँ पर कवि गाँव में आकर अपनी सांस को किसी गहरे हरे मैदान में चलती हुई महसूस करता है, अपने को स्वस्थ मानता है। वह अपने को टटोलता या अपडेट महसूस करता है।

केदारनाथ सिंह की कविता की अन्तर्वस्तु अधिकतर गाँव या उनका लोक है, जो उनकी कविता में निरन्तर अभिव्यक्त होता रहता है। भूतों से सम्बन्धित कहानियों और घटनाओं से लोक का बहरा सम्बन्ध रहा है। यह अंधविश्वास लोक संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है। इस लोक विश्वास का जब केदारनाथ सिंह की कविता में पदापर्ण हुआ तो इसका वर्णन डॉ. विजय मोहनसिंह ने इस प्रकार किया है-...गाँव के ये भूत इतने निरीह और गरीब होते थे कि रास्ते में किसी राही से महज कभी-कभी मांग लेते थे 'चुटकी भर सुर्ती या महज एक बीड़ी। (अनिल त्रिपाठी, मिट्टी की रोशनी, पृ. 19)

इसी प्रकार से पीपल के पेड़ के बारे में केदारनाथ सिंह की कविता में वर्णन पढ़कर वे आगे लिखते हैं- 'वीरान पीपल भी कट चुका है। जब वक होते थे बचाकर रखते कोई बावड़ी, कोई झुरमुट, एकांत में कोई छतनार पेड़ जो अक्सर गाँव के पागल युवा प्रेमियों के लिए सबकी आँख बचाकर मिलने के लिये सेहत स्थल का काम करते थे।(अनिल त्रिपाठी, मिट्टी की रोशनी, पृ. 19) इसी से सम्बन्धित इनकी कविता 'अकाल' और सारस देखी जा सकती है जिसमें लोग शव का दाह-संस्कार करके आते हैं तो लोक में अनेक परम्पराएं प्रचलित होती है,

कई तरह की रस्म निभाई की जाती है। जिसका चित्रण 'न होने की गंध'नामक कविता में इा प्रकार मिलता है-

और अब हम लौट रहे थे

क्योंकि अब हम खाली थे

सबसे अधिक खली थे हमारे कन्धे,

क्योंकि अब हमने नदी का कर्ज उतार दिया था।

न जाने किसके हाथ में एक लाल एक लालटेन थी,

धुंधली-सी।

जो चल रही थी आगे-आगे,

यों हमें दिख गई बस्ती,

यों हम दाखिल हुए फिर से बस्ती में,

www.ignited.in

उस घर के किवाड़,

अब भी खुले थे,

कुछ भी नहीं था, सिर्फ रस्म के मुताबिक

चैखट के पास धीमें-धीमें में जल रही थी,

थोड़ी-सी आग

और उससे कुछ हटकर

रखा था लोहा,

हम बारी-बारी

आग के पास और लोहे के पास गए

हमनें बारी-बारी झुककर

दोनों को छुआ।

यों हम हो गए शुद्ध,

यों हम लौट आए,

जीवितों की लम्बी उदास बिरादरी में'(केदारनाथ सिंह, अकाल में सारस, पृ. 45)

निष्कर्ष

इस प्रकार से लोक-विश्वास, लोक मूल्य, लोक रूढ़ियां और परम्पराओं का मन मोहक चित्रण केदारनाथ सिंह की कविताओं में देखने को मिलता है। कभी-कभी तो यह कवि बहुत बड़ी और बारीक बात कहने के लिए लोक विश्वास और लोक-संस्कृति का सहारा लेता है। कभी-कभी ऐसा लगता है इन लोक विश्वासों के बिना कविता की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इनकी कविताओं में लोक की शब्दावली का भी खूब प्रयोग मिलता है, यह कहना भी उचित होगा कि उनकी एक कविता भी लोक शब्दावली के बिना पूरी नहीं होती। बिछल, बौर, छुअन, निहाई, दुधिया, पाहुन, छलिया, सिरजन, पात, बाट, ढर्र, पछुवा, ठनकी और हार आदि लोक शब्दों की भरमार मिलती ळें

संदर्भ सूची:

1. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे, लोक परम्परा पहचान एवं प्रवाह पृ. 45.46
2. केदारनाथ सिंह, मेरे साक्षात्कार, पृ. 105
3. केदारनाथ सिंह, जमीन पक रही है पृ. 95
4. केदरानाथ सिंह, मेरे साक्षात्कार, पृ. 68
5. केदारनाथ सिंह, उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ, पृ. 11
6. अनिल त्रिपाठी, मिट्टी की रोशनी, पृ. 19
7. केदारनाथ सिंह, अकाल में सारस, पृ. 45
8. अनिल त्रिपाठी, मिट्टी की रोशनी, पृ. 19

Corresponding Author

Sheel*

Assistant, Professor (Hindi) Government College, Safidon, Karnal, Haryana

www.ignited.in